हिमालयी इतिहास के विविध आयाम

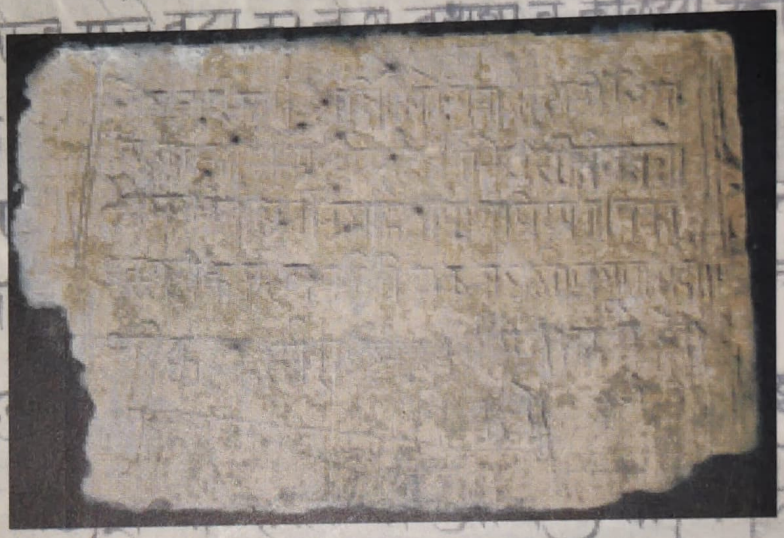

संपादन

गिरिजा पाण्डे
हीरा सिंह भाकुनी

14. ब्रिटिश कुमाऊं की राष्ट्रवादी पत्रकारिता और दलित जागृति

ज्योति शाह

भारत में पत्रकारिता का विकास औपनिवेशिक शासन के सकारात्मक प्रभावों का परिणाम था। विचारों के प्रसार हेतु एक सशक्त माध्यम के रूप में इसकी उपयोगिता को समझ 19वीं सदी के समाज सुधारकों राजा राममोहन रांय, केशव चंद्र सेन, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, सुरेंद्र नाथ बनर्जी आदि ने पत्रकारिता को सामाजिक-धार्मिक आंदोलन हेतु अपना हथियार बनाया। राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ पत्रकारिता का विकास हुआ। राष्ट्रवादी नेताओं ने मंच के रूप में पत्रकारिता का प्रयोग किया। राष्ट्रीय स्तर पर फैली सामाजिक चेतना और राजनैतिक चेतना ने ब्रिटिश कुमाऊं को भी प्रभावित किया। स्थानीय पत्रकारिता ने स्थानीय जनता में न केवल राष्ट्रीयता का प्रसार किया, वरन सामाजिक और नैतिक आयामों में परिवर्तन हेतु जनमानस को दिशा देने का कार्य भी किया।

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में *समय विनोद* (1868, नैनीताल) के प्रकाशन के साथ स्थानीय पत्रकारिता का उदय हुआ। शीघ्र ही *अल्मोड़ा अखबार* (1871-1918, अल्मोड़ा), *गढ़वाल समाचार* (1902-1904, लैंसडाउन), *कूर्मांचल समाचार*(1893-94, अल्मोड़ा), *विषाल कीर्ति, गढ़वाली* (1902-42, देहरादून) आदि उदारवादी पत्र प्रकाशित होने लगे। बीसवीं सदी के प्रथम दशक में स्थानीय पत्रकारिता ने राष्ट्रवादी स्वरूप धारण किया। सामाजिक और राजनैतिक दोनों क्षेत्रों में स्थानीय पत्रकारिता ने आक्रामक रुख अपनाया। 1918 में *अल्मोड़ा अखबार* के बंद हो जाने के पश्चात ब्रिटिश कुमाऊं से प्रकाशित होने वाले प्रमुख पत्रों में *शक्ति* (1918, अल्मोड़ा), पुरुषार्थ (1918-1923, लैंसडाउन), *तरुण कुमाऊं* (1922-23, लैंसडाउन), *कुमाऊं कुमुद* (1922-1945, अल्मोड़ा),